चलकर राह बनाते हम

❑ हिमांशु

यह पुस्तक पढ़ने से पहले तक पाओलो फ्रेरे के बारे में तो थोड़ा बहुत जानता था पर माइल्स हार्टन के बारे में बिल्कुल नहीं। माइल्स ने '30' के दशक में संयुक्त राज्य अमेरिका में हाइलैंडर के पहाड़ी इलाके में 'हाइलैंडर फोक स्कूल' की स्थापना की। सामुदायिक शिक्षा की उनकी यह कोशिश रंग लाई और दक्षिण के अश्वेतों की आत्मचेतना के विकास में इसने अहम् भूमिका निभाई। '50 के दशक में अश्वेतों के नागरिक अधिकार आंदोलनों की पृष्ठभूमि में भी हाइलैंडर के 'सिटीजनशिप स्कूल' (तब तक इसका यह नाम पड़ गया था क्योंकि अश्वेत जिनको मताधिकार से इस तर्क से वंचित रखा जाता था कि वे साक्षर नहीं हैं- यहां पढ़कर नागरिकता प्राप्त कर रहे थे) की अहम् भूमिका थी। पाओलो फ्रेरे, ब्राजील के महान शिक्षाशास्त्री थे जिन्होंने न सिर्फ फासीवादी, साम्राज्यवादी ताकतों से मुठभेड़ की बल्कि '60 के दशक में ब्राजील में जनवादी राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार बनने पर राष्ट्रीय साक्षरता आंदोलन के साथ नेतृत्वकारी रूप से जुड़कर ब्राजीली समाज के सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति दी। माइल्स ने हमेशा व्यवस्था से बाहर रहकर ही कार्य किया। उनका कार्य सीमित क्षेत्र से प्रारंभ हुआ और हालांकि बाद में नागरिकता विद्यालयों की शृंखला दूर तक फैल गई, किंतु माइल्स ने अपना क्षेत्र सीमाओं में निर्धारित किए रखा। इसके ठीक विपरीत पाओलो ने राज्य व्यवस्था के अंग के रूप में मुक्तिगामी शिक्षापद्धति की खोज करते हुए समग्र संरचनात्मक ढाँचे को बदलने का प्रयास किया।

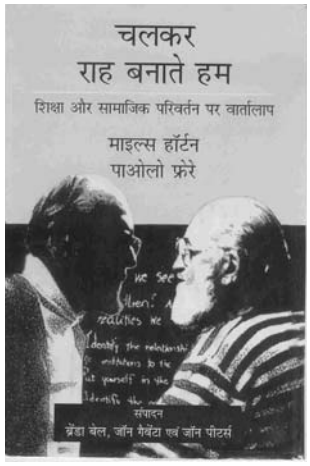

दरअसल ये फर्क ही दोनों के शिक्षा संबंधी दर्शन के दो पृथक वैचारिक वृत्तों का निर्माण करता है। इस पूरी बातचीत में बारम्बार ये वृत्त एक दूसरे को अतिक्रमिक करते हैं, कभी पृथक खड़े होते हैं और कभी एक दूसरे को लील जाते हैं। जहां पाओलो फ्रेरे शिक्षा को 'मुक्ति की सांस्कृतिक कार्रवाई' मानते हैं वहीं माइल्स हार्टन किसी वृहद् आख्यान में शिक्षा की द्वितीयक हैसियत बना दिए जाने के खिलाफ हैं; जहां पाओलो लैटिन अमरीकी शिक्षकों के कम वेतन मिलने की बात करके उनके संगठित होने और संघर्ष करने की वकालत करते हैं (42) वहीं माइल्स संगठन निर्माण और शिक्षा दोनों की भिन्नता रेखांकित करते हुए बताते हैं कि जब उन्हें संगठन निर्माण की आवश्यकता महसूस हुई तो वे हाइलैंडर से इस्तीफा देकर गए ताकि कोई विरोधाभास न हो (87) जहां पाओलो बल देकर कहते हैं '' सवाल इस बात का नहीं है कि लोगों को कैसे पढ़ाया या लिखाया जाये बल्कि उन्हें आने वाली चुनौतियों से परिचित कराया जाए।'' (69) वहीं माइल्स का निर्मम आकलन है कि क्रांति स्कूली व्यवस्था को नहीं बदलती है (167)। इतने मतवैभिन्य के बावजूद जो चीज दोनों में समान है वो है एक दूसरे की प्रतिबद्धता में अगाध निष्ठा और वंचितों के सबलीकरण के लिए एक दूसरे द्वारा किए गए कार्यों का गहरा सम्मान-इसी के चलते यह एक जीवंत बातचीत बनकर सामने आती है।

चूंकि यह किताब मूलत: ब्राजील के निवासियों के लिए लिखी गई और वे हाइलैंडर से अधिक परिचित नहीं थे और चूंकि पाओलो माइल्स की वरिष्ठता का आदर भी करते थे और सबसे बड़ी बात, चूंकि यह किताब हाइलैंडर में ही 'बतियाई' गई, अत: स्वाभाविक रूप से इसमें माइल्स के और हाइलैंडर अनुभव अधिक विस्तार से संकलित हैं। एक चतुर दार्शनिक की तरह पाओलो बीच बीच में हस्तक्षेप करते हुए उनके उदाहरणों से अपने तर्क की पुष्टि करते हैं। इसका सबसे सुंदर उदाहरण एक लम्बे संस्मरण में है जब माइल्स ने अपने स्कूल की पहली (और अश्वेत) शिक्षिका बर्निस रॉबिन्सन के बारे में बताया कि कैसे उन्होंने पढ़ना सिखाने के लिए

यह अक्षर-ज्ञान कराने के क्रम में मानवाधिकार घोषणा के पोस्टर का उपयोग किया (55)। कुछ आगे बढ़ जाने पर पाओलो उन्हें फिर इसी घटना पर लौटाते हुए विस्तार से यह अनुभव सुनाते हैं। वे दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि उस दौरान मानवाधिकार, भेदभाव, नस्लीय शोषण, मुक्ति, आजादी इन सभी मुद्दों पर विचार विमर्श हुआ होगा और इससे पता लगता है कि लोगों के लिए यह पढ़ाई अपने सम्मान का एक हिस्सा थी। पाओलो कहते हैं (और उस गर्मजोशी को सीधे पहुंचाने के लिए मैं उद्धृत कर रहा हूँ।), ''बहुत खूब ! मुझे लग रहा है कि मैं वहां उस खास क्षण में उपस्थित था। मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि उद्घोषणा के बारे में बर्निस के साथ जो बहस कर रहे हैं, वे दुनिया को पढ़ रहे हैं, केवल उद्घोषणा के शब्दों को नहीं। वे मानवाधिकार उद्घोषणा के नजरिए से दुनिया को जान रहे हैं और इस मानवाधिकार उदघोषणा को समझने के क्रम में उन्हें नई जानकारियां मिल रही हैं। उनका ज्ञान अग्रसर हो रहा है।'' (65)

दरअसल पाओलो 'जनता के ज्ञान' के बारे में प्रचलित सरलीकृत रोमानी अवधारणा को संशोधित करते हैं। ''विद्यार्थी हाईलैंडर में खाली हाथ नहीं आते, ठीक, लेकिन उनका ज्ञान सामान्य स्तर का होता है, जिससे आगे बढ़कर तथ्यों के कारणों की तह में जाना ज्ञान का अगला स्तर है और यह विश्लेषणात्मक क्षमता उन तक पहुंचाना शिक्षक की जवाबदेही है।'' पाओलो लिखते हैं, ''यह जनता का अधिकार है और मैं ये मानता हूं कि उन्हें और भी ज्यादा जानने का अधिकार है।'' (118)

मुझे यह पढ़ते हुए रोमांच हो आया। पाओलो न सिर्फ शिक्षा की बैंकीय अवधारणा को खारिज कर रहे है। बैंकीय अवधारणा- जिसमें ज्ञान जमाओं की तरह उंड़ेला जाता है और जो ज्ञान को मात्रात्मक रूप से तौलकर न्यूनता/अधिकता जैसे भेद पैदा करती है। बल्कि वे इसे जनता के अधिकार और शिक्षक की जवाबदेही के रूप में रेखांकित करते हैं। अचानक लेने देने का स्तरीकृत क्रम सर के बल खड़ा हो जाता है - बल्कि सर के बल खड़ा था जो सीधा हो जाता है।)। शिक्षा के राजनैतिक इस्तेमाल का भी गलत अर्थ न लगा लिया जाए इसलिए यहीं वे बल देकर कहते हैं, ''यहां सवाल कक्षा में आने और देश की राजनीतिक सत्ता जैसे विषयों पर ओजपूर्ण व्याख्यान देने का नहीं है, सवाल यह है कि यथार्थ को पढ़ने का फायदा कैसे उठाया जाए, जैसा कि लोग कर रहे हैं, ताकि विद्यार्थियों के लिए अलग तरह और यथार्थ को गहराई से पढ़ना संभव हो।''

चूंकि पाओलो किसी सार्वभौम सिद्धांत की समग्रता में यकीन रखते हैं, अत: वे यह मानते हैं कि जनता के बीच प्रचलित व्यवहार को व्याख्यायित करने की सैद्धांतिक समझ अध्यापक में होनी चाहिए वरना शिक्षण एक वृत्त के अंदर ही घूमता रहेगा। (74) यहां पाओलो जिस अति का शिकार हो रहे हैं उसे माइल्स तुरंत ही संतुलित करते हैं। ठीक है, आपके पास कोई सिद्धांत होना चाहिए पर सवाल यह है कि यह सिद्धांत आया कहां से ? शिक्षा के सिद्धांतों की निर्मिति व्यक्तियों के साथ कार्य करते हुए हुयी है और इसलिए माइल्स के लिए 'व्यक्ति ही आधार है' तथा कोई भी सिद्धांत सार्वभौम सत्य नहीं हो सकता, ''प्रयोग द्वारा ही किसी सिद्धांत की उपयुक्तता और अनुपयुक्तता सिद्ध की जा सकती है।'' एक श्रोता ने दोनों के अंतर पर सटीक टिप्पणी की ''पाओलो लोगों के ज्ञान से आगे बढ़ने की बात कहते हैं और माइल्स लोगों के ज्ञान से शुरूआत करने की वकालत करते हैं।'' (144)

माइल्स न सिर्फ स्थानिक अनुभवों के हिमायती हैं बल्कि उनमें देसज संस्कृति के प्रति भी मोह है। वे रूपक का इस्तेमाल करते हुए अपनी बात कहते हैं कि एक पेड़ को काटकर दूसरी जगह नहीं लगाया जा सकता, उसे नई जगह की जमीन में रोपकर बढ़ने का इंतजार ही किया जा सकता है। (116) लोगों के अनुभव को इतना तानना चाहिए कि धागा न टूटे। वे (संभवत: स्मित मुस्कान के साथ !) कहते हैं कि पाओलो के आमूल परिवर्तनवादी अनुयायियों ने लोगों के अनुभव और ज्ञान के बारे में अनुमान लगाते समय कई गलतियां की हैं। पाओलो भी स्वीकारते हैं कि आमूल परिवर्तनवादियों को इस मुद्दे पर सचेत रहना चाहिए लेकिन (और यह लेकिन महत्त्वपूर्ण

पुस्तक पढ़ते समय मैं रोमांचित हो उठता हूं जब मुझे उसमें कोई ऐसी बात मिलती है जो जीवन और यथार्थ को समझने की मेरी दृष्टि को बेहतर तथा ठोस बनाती है। दूसरे शब्दों में पुस्तक मेरे लिए उस हद तक महत्त्वपूर्ण है कि इसमें मुझे एक सैद्धांतिक औजार प्राप्त होता है, जिसकी सहायता से मैं यथार्थ को अपने रू-ब-रू और अधिक स्पष्ट रूप से देख सकता हूं । शब्दों को पढ़ने और दुनिया को पढ़ने के बीच मैनें यही संबंध स्थापित करने की कोशिश की है। मैं आपकी तरह हमेशा से यथार्थ को पढ़ने का प्रयास करता रहा। परन्तु यथार्थ को पढ़ने की प्रक्रिया यह भी मांग करती है कि एक सैद्धांतिक समझ विकसित हो कि यथार्थ में क्या हो रहा है ? मैं पुस्तकें इसलिए पढ़ता हूं कि मैं यथार्थ को ठीक से पढ़ सकूं।

'चलकर राह बनाते हम' से।

है) सांस्कृतिक बहुलता के बावजूद वे कुछ सार्वभौम मूल्यों की रक्षा के लिए सन्नद्ध हैं। वे विस्तार से स्पष्ट करते हैं कि संस्कृति की आत्मा की रक्षा के नाम पर अध्यापक को चुप रहने का अधिकार नहीं है। किसी समुदाय की सांस्कृतिक परम्पराओं में हस्तक्षेप करना दरअसल उस परम्परागत संस्कृति के प्रति गहरे सम्मान का ही सूचक है।

हस्तक्षेप - यह शब्द दुबारा आया है। इस पूरी बातचीत में यह पाओलो का प्रिय शब्द बनकर उभर कर आता है। अगर 'हस्तक्षेप' पाओलो के विचार का केन्द्रीय तत्व है तो माइल्स के विचारों का प्रतिनिधित्व कौनसा शब्द करेगा ? 'सहभागिता' । वे बार-बार टोकते हैं- आरोपण नहीं सहभागिता ! और सबसे मजेदार बात यह है कि अंत तक आते-आते यह प्रयोग उलट जाता है क्योंकि यह बातचीत 'वनअप' रहने के उद्देश्य से की ही नहीं जा रही थी। दोनों ही अपनी अतियों को दुरूस्त करते हुए न सिर्फ दूसरे की आलोचना ग्रहण करते हैं बल्कि विमर्श के मध्यबिंदु भी तलाशते हैं। जहां एक ओर माइल्स जीव विज्ञान जैसे प्राकृतिक विज्ञान के विषय को भी सामाजिक संदर्भ में रखने की जवाबदेही स्वीकार करते हैं और कहते हैं कि यदि आप विज्ञान के बारे में लोगों को जानकारी देते हैं और यह नहीं बताते कि शक्तिशाली इसका (दुः) उपयोग कर सकता है तो इसका अर्थ है कि आप शक्तिशाली के सामने आत्मसर्मपण कर चुके हैं। (79) वहीं दूसरी ओर पाओलो दो जोखिमों की चर्चा करते हैं - विषय को अधर में छोड़कर केवल राजनीतिक समस्याओं पर बल देने का जोखिम और विषय के राजनीतिक पक्ष को ध्यान में न रखते हुए केवल विषय पढ़ाने का जोखिम - उनके अनुसार दोनों ही गलत हैं। (82) माइल्स कहते हैं कि हाइलैंडर भी एक प्रकार का हस्तक्षेप ही था और पाओलो कहते हैं, दूसरों को शामिल करना संघर्ष के दांवपेच से संबंधित एक पहलू है। (155)

माइल्स व्यवस्था के बाहर रहकर काम करने में क्यों यकीन रखते हैं ? उनके अनुसार व्यवस्था के अंदर सुधार, व्यवस्था को मजबूती प्रदान करता है अर्थात् व्यवस्था उसे अपने अंदर समायोजित कर लेती है। सुधारक व्यवस्था को बदलते नहीं वे उसे अधिक स्वीकार्य और न्याय संगत बनाते हैं। (150) यहां पाओलो (मेरे विचार से) सर्वश्रेष्ठ हस्तक्षेप करते हैं वे माइल्स से 'व्यवस्था' को व्यापक अर्थों में लेने का आग्रह करते हैं। व्यवस्था अर्थात् उत्पादक व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था, संरचनात्मक व्यवस्था। माइल्स और उनका हाइलैंडर शिक्षा की उपव्यवस्था के बाहर है। किंतु यह व्यवस्था के भीतर है। पूरी बातचीत में पहली बार मुझे तल्खी की गंध आती है जब माइल्स कहते हैं, मैं स्कूली प्रणाली की बात कर रहा हूं । मैं स्कूली व्यवस्था की बात कर रहा हूं, सामाजिक व्यवस्था की नहीं।'' (156) व्यवस्था की व्यापक परिभाषा माइल्स के सम्पूर्ण दर्शन पर चोट है, और यह उन्हें लगती भी है।

> *जानने की प्रक्रिया ऐतिहासिक होती है और मनुष्य जाति के इतिहास को जाने बिना जानना या जानकारी असंभव है। यहां पर मैं धर्मशास्त्र पर विचार-विमर्श नहीं करना चाहता । कहने का तात्पर्य यह है कि इतिहास का सामाजिक अनुभव इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य के रूप में हमने ज्ञान सृजित किया है। इसी कारण हमारे सृजित ज्ञान का पुनः सृजन होता है और नया ज्ञान सामने आता है। यदि ज्ञान की सीमाएं छोटी पड़ने लगती हैं, यदि कल का ज्ञान अप्रासांगिक होने लगता है, तब हमें नये ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। इसका मतलब यह हुआ कि ज्ञान की ऐतिहासिकता होती है। ज्ञान कभी भी स्थिर नहीं होता। यह गतिशील है, इसकी प्रक्रिया हमेशा चलती रहती है।*
>
> *'चलकर राह बनाते हम' से।*

व्यवस्था के बाहर और भीतर पाओलो की लड़ाई दो मोर्चों पर एक साथ थी। भारत में सरकारी स्कूलों में साफ सुथरी टाटपट्टी, पक्की इमारत (यानी ऐसी इमारत जिसकी छत बारिश में न चूती हो), साफ पीने का पानी और न्यूनतम राशि पर पाठ्यपुस्तकें पहली प्राथमिकता हैं। वंचितों के विवेकीकरण के लिए सबसे पहले उन सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के परिप्रेक्ष्यगत सुधार की आवश्यकता है जिन्हें हमने जनगणना और पोलियो उन्मूलन के काम में जोत रखा है। जिस सांस्कृतिक मुक्ति की बात शिक्षाशास्त्र के संदर्भ में पाओलो फ्रेरे ने की थी, क्या वह हमारे पाठ्यक्रम में समाहित है ? इतिहास में चयन-उत्सर्जन को लेकर सौभाग्य से एक राष्ट्रव्यापी बहस छिड़ गई है, लेकिन क्या विकास की अंधाधुंध गति के प्रतिरोध में खड़े वैकल्पिक आंदोलनों या उनकी दृष्टि की झलक भी हमारे पाठ्यक्रमों में मिलती है ? हाइलैंडर के नागरिकता आंदोलन के समान क्या एक भी सामाजिक आंदोलन हमारी शिक्षापद्धति उद्भूत कर पाई है या कर सकने की ताकत रखती है ? हर बरस झुंझनू, करौली, बांसवाड़ा के मेघावी बच्चे इसी शिक्षा व्यवस्था की प्राविण्यसूची में नाम लाते हैं, हम तत्काल उन्हें वैश्वीकृत व्यवस्था के कलपुर्जों के रूप में कहीं न कहीं फिट कर देते हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था ने सामाजिक उत्पीड़न के आयामों पर एक तकलीफदेह चुप्पी साध रखी है और इसलिए हम शोषणचक्र की बारम्बरता खत्म करने के प्रयास करने की बजाय सिर्फ चंद लोगों को उस से इस पाले में ले आते हैं। वैकल्पिक शिक्षा कार्यक्रमों में मेरी आस्था के बावजूद मेरा मानना है कि आवश्यकता मुख्यधारा के स्कूलों को बेहतर बनाने की है। ◆